P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बदलते आधुनिक युग में मूल्य शिक्षा का महत्व

भूपेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
वी0वी0 (पी0जी0) कॉलेज,
शामली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कर्तव्यनिष्ठा हमारी संस्कृति की एक प्रधान वस्तु रही है, आधुनिकता सम्बन्धी भ्रामक धारणा तथा विज्ञान और तकनीकी के विकास एवं औद्योगिक प्रसार ने हमारी नैतिक मान्यताओ एवं मूल्यो के लिए खतरा पैदा कर दिया है।वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में हमारे नैतिक मूल्यो को चुनौतियो का सामना करना पड रहा है। वर्तमान समाज एक संधिकाल से गुजर रहा हैं।पुराने नैतिक एवं सामाजिक मूल्य समाप्तप्रायः हो रहे है, किन्तु नये मूल्य अभी स्थापित नही हो पाये, जिन्हे व्यवहार में उतारा जा सके। बिल डुरांड ने इस असमजसपूर्ण स्थिति का सुन्दर चित्रण किया है;'हमारे नैतिक मूल्यो में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारक विविध है। खेत–खलिहान का स्थान कारखानों ने और घरों का स्थान नगरो की सडको ने ले लिया है। हमें आने वाली पीढी के मनोभावो को समझना चाहिए। उनकी जीवनचर्या एवं समस्याएं नई एवं भिन्न हैं। औद्योगिक क्रान्ति के कारण उनके रीति–रिवाज, उनकी पोशाक, कार्यशैली, धर्म, आचरण आदि में परिवर्तन आया है। पुरानी मान्यताओ के आधार प इनका मूल्यांकन करना असंगत एवं अनैतिहासिक होगा,ठीक वैसे ही जैसे किसी आधुनिक पुरूष को प्राचीन काल की पोशाक अथवा पादत्राण धारण करने के लिए बाध्य किया जाए। ''विविध वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा हमारी दैनिक जीवन में उपयोगी नैतिक मान्यताएँ बहुत सीमा तक प्रभावित हुई है। इन आविष्कारों के कारण हमारे दैनिक जीवन मे हुए परिवर्तनो को परिगणित करना कठिन है। आज मानव को प्रतिक्षण नई परिस्थितियो एवं नई समस्याओ का सामना करना पड रहा है। आज का मानव काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,से आक्रान्त है। वह मनसा, वाचा अथवा कर्मणा इनसे निर्लिप्त नही है। समाज अथवा राष्ट्र के हित के आगे उसे अपना स्वार्थ सर्वाधिक महत्वपूर्ण लगने लगा है। इसका प्रभाव टूटते हुए परिवारो के रूप में हमारे सामने है।

मुख्य शब्द : धर्म, सस्कृति, मूल्य, समाज ।

प्रस्तावना

हमारी संस्कृति में धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष इन चार पुरूषार्थो का उल्लेख जीवन लक्ष्यो के रूप में हुआ है।अर्थ साधना एवं काम भावना दोनो ही धर्म से प्रेरित एवं संचालित होती थी,किन्तु आज धर्म भावना से इनका संबंध टूट–सा गया है।धर्मसाधित काम भावना का स्थान स्वच्छंद एवं विकृत काम भावना ने ले लिया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने मानव की तेरह मूल भावनाओ मे काम भावना को अन्यतम माना है।

इसे विकृति की ओर ले जाने से भी आधुनिक विज्ञान सहायक हुआ है।आज की गर्भनिरोधक औषधियों एवं उपकरणो के कारण हमारी प्राचीन नैतिक मान्यता को भारी क्षति पहुँची है।अब यौनाचार और प्रजनन में सम्बन्ध न रह जाने से हमारे सामने अनेक समस्याएँ खडी होती है और हमारे नैतिक मूल्यो को चुनौती देती है।इसी का कुपरिणाम है कि आज अविवाहित माताओ की संख्या दिनोदिन बढती जा रही है।एक सर्वेक्षण के अनुसार पद्धति का यह अंधानुकरण भी हमारे नैतिक मूल्यो के विघटन के लिए उत्तरदायी हैं। आजकल हमारी पत्र–पत्रिकाओं अपराधो,हत्याओं,आंदोलनों,बलात्कारो की खबरों से भरी होती है।

ऐसी परिस्थितियों का साक्षी कवि पूछता हैं:

चरणोन्नत जग में जबकि आज विज्ञान ज्ञान,
बहु भौतिक साधन,यन्त्रयान,वैभव महान,
सेवक है विद्युत वाष्प शक्ति धनबल नितान्त,
फिर क्यों जग में उत्पीडन? जीवन क्यों अशान्त?

कवि स्वंय इसका उत्तर देता हैं:

मानव ने पाई देश काल पर जय निश्चय,
मानव के पास नहीं मानव का आज हदय

भारत प्राचीन काल से ही एक समृद्ध संस्कृति और सभ्यता का देश रहा है,किन्तु वर्तमान युग में इसमें निरन्तर परिवर्तन हो रहा है।इन परिवर्तनो की श्रृंखला में एक कडी उत्तर आधुनिकता के बाद की भी शामिल हो गई हैं।उत्तर आधुनिकता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1960 में लोस्ली फिल्डर और इहाब हस्तान द्वारा किया गया था।सत्तर के दशक में इसका व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ।वास्तुशास्त्र में इसका पहला संबोध ''वास्तुक' के रूप में किया गया। बाद में चलकर नृत्य,रंगमंच संगीत,समाज एवं संस्कृति से संबंधित विज्ञानों मे इसका व्यापक प्रयोग किया गया।

उत्तर आधुनिक युग वैकल्पिक समाज व्यवस्था के स्वरूप की रूपावली प्रस्तुत करता है। इस व्यवस्था मे व्यवस्था मे आदर्श प्रारूप के अमूर्त निमाण का प्रयास किया गया है। आधुनिक युग मे समाज, संस्कृति, आर्थिकी एवं व्यक्ति का परिवर्तित स्वरूप सामने आया । औद्योगिक क्रान्ति ने मानव के शारीरिक श्रम, प्रतिदिन के मानसिक कार्य का मानवीय सोच का अवमूल्यन किया है। पूँजीवाद के असमानता और शोषण को जन्म दिया है, जिसके कारण अन्तराल, असमान वितरण व अन्याय के बीच स्वार्थो को बढावा मिलता है और सामुदायिक हितो को तिलांजलि दी जाती है। मशीनो द्वारा उत्पादन की बहुलता ने उपभोक्ताओ को मोहपोश में बाँधने का प्रयास किया है। प्रगति के तकनीकी आयाम की भी सीमाएँ है। विज्ञान के मूल्य व तर्क मूल्यो का ह्रास, भौतिक सभ्यता का वर्चस्व, आर्थिक विकास के लक्ष्यो को प्राथमिकता, विज्ञान की तार्किकता मे विश्वास , लौकिक एवं परलौकिक मूल्यो की अंतरंगता की स्वीकृति आदि आयाम विश्व की वर्तमान उत्तर आधुनिक की स्थिति को स्पष्ट करते है।

पाश्चात्य समाज का अक्षीय सिद्धन्त आधुनिकता है, जबकि उत्तर आधुनिक युग मे ज्ञान सम्पत्ति का आधार होता है। बेल ने 1970 के दशक मे भावी भविष्य मे समाज की सरंचना को समझ लिया था। यही कारण था कि उन्होने कहा कि आने वाला युग, उत्तर आधुनिक समाज का है। इस समाज मे स्तरीकरण का आधार आक्षीय सिद्धान्त पर आधारित होगा। चूँकि तकनीकी का अत्यधिक प्रयोग होगा इसलिए कार्य मे समय की बचत होगी जिससे मनोरजन या मिलाप के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। समाज की अर्थव्यवस्था, सेवाक्षेत्रक या तृतीयक क्षेत्रक प्रधान होगी, तो द्वितीय क्षेत्रक प्रभावशाली सहयोगी होगा। आधुनिकता ने विज्ञान को महत्व प्रदान किया। इसके विपरीत उत्तर आधुनिकता मानवतावाद को महत्व प्रदान करती है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के प्रभावो के समाज और संस्कृति के अनेक पक्षो को विकृत किया है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ने उपभोक्तावाद की मनोवृति व संस्कृति के अनेक पक्षो को विकृत किया है। विज्ञान तथा पौद्योगिकी ने उपभोक्तावाद की मनोवृत्ति व संस्कृति को जन्म दिया । इसमे भौतिकवाद को जीवन लक्ष्य माना गया । इसके विपरीत उत्तर आधुनिकता ने मनुष्य के वस्तुकरण को नकारा है। मानव को व्यक्ति को रूप मे देखने का अर्थ है उसकी संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता , मानवीय संबंन्धो का नियमन व संचालन।

अतः मनुष्य को मानवता के विकास के लिए ऐसे आधार निर्माण करने होंगे जो व्यक्ति व समूह के लिए इस संसार को सार्थक तथा सुखी बना सके । मानव मनाकर को साकार करने तथा मनः स्वास्थता को आशावादी और प्रमाणित करने वाले की मानव सफल है। (ए.नागराज) उत्तर आधुनिकतावादी एक दिवास्वपन देख रहे है। वे सोचते है कि वह दिन बहुत नजदीक है। जब मार्क्स के किसी सार्वभौमक बैनर के नीचे समस्त दुनिया एक हो जायेगी । यह सब सार्थक करने के लिए आवश्यक है हमारी शिक्षा प्रणाली मे मूल्याधारित शिक्षा का समावेश । मूल्य परायण मानव ही संस्कृति मानव है। हमारे सारे संबन्धो का आधार मूल्य ही है । अपनत्व , आत्मीयता, स्वजन का तात्पर्य मूल्य ही प्रकाशित करते है। उन्हे अपनाने के लिए उनके और परिस्थिति मे जन सामान्य की उदात मान्यताएँ मानव – मूल्य होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

धीरे धीरे खत्म होते जा रहे नैतिक मूल्यों के प्रति समाज को सचेत तथा जागरूक करना

कसौटियाँ

जिसका ध्येय व्यापक लोक–कल्याण हो, जिससे व्यक्ति का उदात्तीकरण हो। वही जीवन मूल्य है। मूल्परक शिक्षा की जितनी आवश्यकता आज और उत्तर आधुनिक युग मे महसूस की जाएगी उतनी पहले कमी नही थी, क्योकि आज हम गहन संक्रान्ति काल से विघटित हो रहे है। आज सदाचरण, सत्य अहिसा ,प्रेम ,शान्ति जैसे शाश्वत एवंपरम्परागत मूल्य की पुनः प्रतिष्ठा की महती आवश्यकता है। ये मूल्यो न केवल व्यक्ति उत्थान के लिए अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति एवं शान्ति के लिए भी परम आवश्यक हैं आज समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की विकृतियाँ और बढ़ते अपराधों की संख्या का मुख्य कारण समाज का मूल्यविहीन का ओर अग्रसर होना है। उन्हें अपने मूल्यों की चिन्ता नहीं है। आज बहुजन हिताय और सर्वजन सुखाय की अवधारणा धीरे–धीरे समाज से मिटती जा रही है। वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखते है कि आज का मानव कैसे भौतिकवाद का अनुसरण कर रहा है। और भोग–विलासिता का दास बनता जा रहा है।उसके आकर्षक का केन्द्र भी भौतिक सभ्यता से ही प्रभावित है।वह समाज में विभिन्न तरह के प्रदूषणो को फैला रहा है।उनको बढावा दे रहा है। आज समाज में तेजी से नैतिक व चारित्रिक पतन हुआ है,जिससे जीवनचर्या में हिंसा,झूठ,चोरी,कुशील और परिग्रह अर्थात् संग्रहवति का बोलबाला हो गया है। हमारी सोच बदल गई हैं। बौद्धिक प्रदूषण फैल गया है। हमारे अंतस् से संवेदनशीलता, श्रम, सेवा, संयम, सौहार्द, परोपकार और राष्ट्रप्रेम जैसी उदात्त और भव्य भावनाएँ तिरोहित हो गई है। किसी भी परिवार, समाज, राष्ट्र की धारणायें, मान्यताएँ, आदर्श और उच्चतर आकांक्षएँ ही वहाँ के जीवन–मूल्यों की प्रस्थापना करती है। और ये देशकाल व परस्थिति सापेक्ष होती है भारतीय जीवन मूल्यां के आधार पर जीवन के प्रति वैयक्तिक उदातीकरण अथवा आन्तरिक उन्नयन व्यक्ति को मानव बनाने का श्रेय इन्ही जीवनमूल्यों को है।

आहार, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य और पशु दोनों में समान है। केवल धर्म ही मनुष्यों में एक विशेष लक्षण होता है। धर्म को हम ''महाभारत' श्लोक से समझ सकते है–कि व्यक्ति, राष्ट्र को, जीवन को संस्थाओं को, लोक और परलोक सबको धारण करने वाले जो शाश्वत सर्वोपरि नियम है, वे धर्म हैं (धर्म थोथे कर्मों का जंजाल नहीं हैं) माना आज अर्थ प्रधान युग है फिर भी आज के मानव को स्थायी शान्ति इन्हीं सद्गुणों और मानव–मूल्यों से ही सम्भव है। वस्तुतः मानव जीवन की सफलता मूल्य शिक्षा में ही निहित है। मूल्या निर्धारिण की प्रक्रिया को ही वास्तविक शिक्षा माना गया है। दार्शनिक दृष्टिकोण से जीवन मूल्यों के अनवरत बोध एवं परीक्षा का नाम ही शिक्षा है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों एवं गुणों को विकसित करने हेतु शिक्षा एक सशक्त साधन है। मूल्य शिक्षा के संप्रत्यय में निम्न अंगों का समावेश होता है। समाजीकरण, उत्तम संस्कृतिक विरासत का संरक्षण उत्तम विकल्प चुनने की कुशलता, व्यवसायोन्मुख मानव शक्ति का सृजन करना आदि। आज की तनाव और प्रतिस्पर्धा से भरी जिदंगी में मार्ग में भटके हुए छात्रों को मूल्य शिक्षा ही सद्मार्ग की प्रेरणा प्रदान करने के उनके जीवन में सामाजिक चेतना जागत करती है और जीवन लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। आज छात्र, शिक्षक, प्रशासक सभी शॉर्टकट खोजने में लगे दिखाई देता है। इसमें बहुतों को इष्ट प्राप्ति भी होती है, किन्तु नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की बलि देकर, आत्महीन होकर। इस सन्दर्भ मे एक कवि की कविता निम्नांकित आत्मानुसंधान लक्ष्यनिष्ठ है–

मेरे जीवन की प्रक्रिया
आदमी हो सकने की
एक कोशिश है।
यूँ एक ख्याल कभी था,
वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, खिलाड़ी,
नेता, कलाकार..... बनने का
लेकिन हैरत की बात है कि,
यह सब बनने की चक्कर में
मै 'आदमी' ही नहीं रहा और में
बन गया हिंसक व क्रूर.....यानी
आजकल मौन और आत्मालोचन के शस्त्र द्वारा
मै उस क्रूरता से लड रहा हूँ।
कदाचित् 'आदमी' बनने के लिए

मानव मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण समूह है, जिसे अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियन्त्रिण होते है तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा क्रमशः निःसृत एवं परिपोषित होते है। 'बहुजनहित' इन जीवन मूल्यों की कसौटी कहीं जा सकती है। जीवन–मूल्य मानवीय आचरण एवं व्यवहारों का एक मापदण्ड या मानक है। ये मानवीय अनुभवों के साथ ही विविध सांस्कृतिक, सामाजिक परम्पराओं का भी अवलम्बित होते है।

मानवीय दृष्किोण को ध्यान में रखकर निम्न आधारो पर मूल्यों का वर्गीकरण किया गया है–

प्राकृतिक मूल्यः प्राणमय, अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय।

विस्तारक मूल्यः परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व।

सत्यम शिवम् सुन्दरम् परक मूल्यः मनोरंजनात्मक, सौन्दर्यात्मक, पर्यावपरणपरक तथा साहित्यिक।

उदात्तमूल्यः नैतिक चारित्रिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक।

आधुनिक मूल्यः राजनैतिक, संवैधानिक, वैज्ञानिक एवं आर्थिक। ये सभी मूल्य उत्तर आधुनिक युग में मानव जीवन के लिए अमूल्य है। वास्वविकता जो यह है कि मानवीय मूल्यों की कोई निश्चित संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती। युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप वैश्विक शान्ति एवं वातावरण के संरक्षण के लिए नये मूल्यों की उत्कृष्ट आवश्यकता है। वस्तुतः महत्वपूर्ण प्रश्न मूल्यों की संख्या अथवा वर्गीकरण का अथवा उनकी परिभाषा तथा परिसीमा का नहीं अपितु उनकी पुनः प्रतिष्ठा का है।

निष्कर्ष

नई शिक्षा– नीति मूल्यों के गिरते स्तर पर चिन्ता प्रकट करते हुए मूल्य शिक्षा पर विशेष बल देती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतान्त्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को मन में बैठना और विद्यार्थियों के व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक और सौन्दर्यपूरक विकास करना नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार की मॉग की जा रही है। सुधार के लिए नैतिक मूल्यों में समन्वित दृष्टिकोकण की आवश्यकता है।

आज व्यक्ति शाश्वत मूल्यों को खोता जा रहा है तथा तत्कालीन जीवन को सुखी बनने के लिए अनवरत प्रयासरत है। शिक्षक, अभिभावक, राजनेता, अधिकारी सभी मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे है। इस मूल्य–संकट की स्थिति के उबरने का एकमात्र महत्वपूर्ण समाधान मूल्यपरक समाजीकरण है। कहा जाता है– 'मूल्य सिखाए भी जाते है और ग्रहण भी किये जाते है। मूल्यों की आवश्यकता प्रत्येक युग में है, न केवल उत्तर आधुनिक युग में आवश्यकता है आज सभी के इस विषय पर चिन्तन की और अपने में सुधार की। मूल्य तो शाश्वत है इसलिए मूल्य धारण करना अपना नैतिक कर्तव्य समझना चाहिए ताकि 'आप सुधरें, जग स्वयं सुधर जाएगा।

मूल्य पालन में यदि हमें मार्ग न सूझे या उलझन हो मन में शंका हो तो, उपनिषद् कहता है– कि अपने निकट उत्तम विचार वालों से, सदाचरण वालों से, धर्म कर्म से जीवन बिताने वालें से, ब्रहाज्ञानी से सलाह लेनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मानव व्यवहार दर्शन– ए. नागराजः जीवन विद्या प्रकाशन
मानव– मूल्य व्याख्या कोष– डा0 धर्मपाल मैनी व आदित्य प्रचण्डिया
मूल्यपरक शिक्षा और समाज– नत्थूलाल गुप्ता, नमन प्रकाशन
दैनिक समाचार पत्र
पत्र–पत्रिकाऐं।